स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

- डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰के॰ कॉलेज

पाश्चात्य साहित्य चिन्तन - आभिजात्यवाद

आभिजात्यवाद को अंग्रेजी में क्लासिसिज्म (Classicism) कहा जाता है। हिन्दी में इसे शास्त्रवाद एवं श्रेण्यवाद के नाम से भी संबोधित किया गया है। शास्त्रवाद से तात्पर्य शास्त्रबद्धता एवं श्रेण्यवाद से श्रेणीबद्धता है।

रोमन लेखक इसका प्रयोग साहित्य के संदर्भ में 'स्क्रिपतर क्लासिकस' अर्थात अभिजात वर्ग के साहित्य के लिए किया था। आभिजात्यवाद लगातार प्रयोग और प्रचलन के कारण अंग्रेजी साहित्य में क्लासिसिज्म की 2000 वर्ष की क्रमशः विकसित अवधारणा के लिए हिन्दी में रूढ़ होकर मान्य हो गया है। 'आभिजात्यवाद' का प्रयोग ऐतिहासिक श्रेणी के रूप में एक ऐसे युग के लिए भी किया जाता रहा जिसमें कालजयी साहित्य की रचना हुई हो। इसी अर्थ में संस्कृत साहित्य के लिए 'क्लासिकल लिटरेचर' पद का प्रयोग प्रसिद्ध है जैसे - वाल्मीकि 'रामायण,' कालिदास का 'कुमारसम्भवम्' और अभिज्ञान शाकुंतलम्। तुलसीदास का 'रामचरितमानस', प्रसाद की कामायनी, निराला की 'राम की शक्ति-पूजा आदि रचनाएँ विभिन्न काल खण्डों में रची जाने पर भी क्लासिक रचनाएँ मानी जाती हैं।

वस्तुतः वैसी रचनाएँ जिनके आदर्श अनुकरणीय हों एवं युग-प्रवर्तन की क्षमता निहित हो, वे आभिजात्यवाद के अन्तर्गत आती हैं।

'आभिजात्यवादी' सिद्धांतों के संकेत प्लेटो एवं विकास अरस्तु तथा सिलार होरेस के चिंतन में दिखाई देता है। किंतु साहित्य रचना का संबंध वर्ग विभाजन के इतिहास से है। जिन साहित्यिक रचनाओं को उच्च वर्ग का संरक्षण प्राप्त होता था और यह साहित्य उच्च वर्ग की संस्कृति से सम्बद्ध, परिमार्जित और 'शास्त्रबद्ध' होता था। ऐसे अभिजातवर्गीय साहित्य की मूल्यवत्ता एवं अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण ही प्रारम्भ में इसे 'आभिजात्यवाद' नाम से संबोधित किया गया। रोम में होरेस, बोकेशियो, सिसरो, डिमेट्रियस, पेट्रिमार्क आदि लेखकों ने आभिजात्यवादी परंपरा का विस्तार किया।

आभिजात्यवादी विद्वानों का मानना था कि प्राचीन रचनाकारों ने अभिव्यक्ति के सभी रूपों को सिद्ध कर लिया है। इसलिए उनके नियमों को शाश्वत मानकर उन्हें हर युग में रचना का आधार और मूल्यांकन की कसौटी बनाना चाहिए

Scanned with CamScan